Knowledgeable Research Vol.1, No.2, September 2022.

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) और संगीत

डॉ प्रियंका शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

ईमेल : priyankshad01@gmail.com

****

सारांश : *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को एक राष्ट्रीय दिशा देने और उसे आधुनिक तकनीकी, सामाजिक, और आर्थिक परिवर्तनों के साथ अनुकूलित करने का प्रयास है। इस नीति में संगीत को एक महत्वपूर्ण भूमिका दी गई है, जो शिक्षा के स्तर को समृद्ध करने और छात्रों के विकास में मदद करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। संगीत को मनोवैज्ञानिक और शिक्षात्मक लाभ का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है। शिक्षा में संगीत की उपस्थिति छात्रों के मनोबल को बढ़ाती है,उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारती है,और उनके सोचने की क्षमता को विकसित करती है। संगीत के माध्यम से,छात्रों में संवेदनशीलता,समर्पण,और सहनशीलता का विकास होता है,जो उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए तैयार करता है। संगीत एक ऐसा कौशल है जो छात्रों को राष्ट्रीय सोच,नए कौशल,और अद्वितीय समस्याओं का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है। संगीत की शिक्षा विभिन्न कौशलों को विकसित करती है,जैसे कि सहयोग,टीमवर्क,समस्या समाधान,और नवाचारिता। इससे छात्रों को आत्म-संदर्भन और स्वाध्याय का महत्व समझाया जाता है,जो उनकी स्वतंत्रता और संवेदनशीलता को बढ़ाता है। संगीत की शिक्षा सामाजिक और सांस्कृतिक समर्थन को बढ़ाती है। संगीत के माध्यम से,छात्रों को विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का अध्ययन करने और समझने का मौका मिलता है,जैसे कि भारतीय संगीत,शास्त्रीय संगीत,लोक संगीत,गायन,वादन,राग,ताल, और संगीत के इतिहास आदि। इसके अलावा, संगीत के माध्यम से छात्रों को विभिन्न समाजिक और नैतिक मूल्यों का संदेश मिलता है, जैसे कि सहयोग,समानता,समरसता,और सामूहिकता। इस तरह,राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संगीत को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा गया है, जो छात्रों को उनके व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास में मदद करता है। इसके अलावा,संगीत के माध्यम से छात्रों को समृद्ध और अद्वितीय अनुभव प्रदान किया जाता है, जो उन्हें संगीत के साथ एक गहरे संवाद में ले जाता है और उन्हें*

जीवन की हर क्षेत्र में सफलता के मार्ग पर ले जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने संगीत को एक समर्थन स्तर पर उच्च शिक्षा में भी शामिल किया है। इसने संगीत शिक्षा को न केवल प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर बढ़ावा दिया है, बल्कि संगीत अध्ययन को उच्चतर शिक्षा के भीतर भी महत्वपूर्ण माना गया है। इससे छात्रों को संगीत विषय में अध्ययन करने का और उसमें अधिक विशेषज्ञता प्राप्त करने का मौका मिलेगा।संगीत को शिक्षा के इस महत्वपूर्ण पहलु के रूप में समाहित करने से, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय समाज में संगीत के महत्व को पुनः स्थापित किया है। इससे छात्रों को संगीत के साथ अधिक सम्पर्क करने और उसमें रूचि लेने का मौका मिलेगा,जिससे वे अपने व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के माध्यम से संगीत के लाभों को प्राप्त कर सकें।संगीत की भूमिका को बढ़ाने से,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने छात्रों को एक उत्कृष्ट और समृद्ध शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है,जो उन्हें अपने जीवन में सार्थकता और समृद्धि की दिशा में अग्रसर करेगा। इससे संगीत की समाज में महत्वपूर्ण भूमिका को समझने और उसे प्रोत्साहित करने का महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

मुख्य शब्द- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा, संगीत शिक्षा,संगीत शिक्षक*

****

शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसमें ज्ञान, कौशल, और सीखने की क्षमता को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक, सामाजिक, और आत्मनिर्भरता की दृष्टिकोण प्रदान करना है, जिससे वह समाज में सकारात्मक रूप से योगदान कर सके।

''शिक्षा ही वह मार्ग है जो जीवन को सही दिशा में पहुंचाता है, जैसे कि सूरज को पूरब से पश्चिम ले जाने वाला हरियाणा है।

संगीत शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में एक नए दृष्टिकोण को प्रवर्तित करती है जिसमें रचनात्मकता, सहजता, और सामूहिकता के माध्यम से छात्रों को एक विशेष अनुभव प्रदान होता है।संगीत शिक्षा छात्रों को सांस्कृतिक धारा के साथ जोड़ने का साधन है। यह उन्हें विभिन्न संगीत शैलियों, तालमी विविधताओं, और समृद्ध संगीतीय विरासतों से मिलता है जो उनकी सांस्कृतिक विकास में मदद करता है। संगीत शिक्षा छात्रों के मानव विकास को प्रोत्साहित करती है। यह उन्हें सहजता, सहायक भावनाएं, और समृद्धि के साथ बचपन से लेकर बड़े होने तक योग्य बनाती है और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करती है। संगीत का अध्ययन उनकी चिंता को कम करने, स्थिति को सुधारने, और उन्हें एक सकारात्मक माहौल में रखने में मदद करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा क्षेत्र में संपूर्ण रूप से परिवर्तन करने का प्रयास किया है और संगीत शिक्षा के क्षेत्र में भी इस बदलाव को समर्थन दिया है। इसमें संगीत शिक्षा को महत्वपूर्ण और अनिवार्य रूप में देखा गया है, जिससे छात्रों को सांस्कृतिक समृद्धि, भाषा विकास, और सामाजिक सहगमन का अनुभव हो सके।संगीत शिक्षा में बदलाव कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने संगीत को शिक्षा के कुल माध्यम के रूप में मना है और स्कूलों में संगीत को विभिन्न विषयों में एक शिक्षा के रूप में प्रस्तुत करने का सुझाव दिया है।राष्ट्रीय नीति ने विभिन्न स्तरों पर संगीत विद्यालयों की स्थापना के लिए प्रेरित किया है ताकि रुचिशील छात्र संगीत की शिक्षा में समर्थ हो सकें।संगीत

शिक्षकों की प्रशिक्षण में सुधार करने का प्रयास किया है और उन्हें नए शिक्षा पैटर्न्स और तकनीकों के साथ संगीत शिक्षा देने के लिए तैयार करने का कदम उठाया है। स्कूलों और कॉलेजों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संगीत और कला स्पर्धाओं का आयोजन करने के लिए प्रेरित किया है ताकि छात्र संगीत और कला के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को व्यक्त कर सकें।

शिक्षा और संगीत हमारे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षा व्यक्ति की सोचने, समझने, और सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का सामना करने की क्षमता को विकसित करने में मदद करती है। संगीत शिक्षा ने रस, ताल, और स्वरों के माध्यम से छात्रों को भावनात्मक और सांस्कृतिक साक्षरता में मदद की है। यह शिक्षा छात्रों को सहजता, समर्पण, और सहयोगी भावना सिखाती है, जो उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार करती है।इस रूप में, शिक्षा और संगीत व्यक्ति के समृद्धि और समृद्धिक जीवन की प्रेरणा से भरी होती हैं। इनका संबद्धता और सहयोग एक समृद्ध और समर्थ समाज की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

पहले शिक्षा में, संगीत शिक्षा को सिर्फ एक विषय के रूप में देखा जाता था, जो छात्रों को केवल सांस्कृतिक अनुभव देने का कार्य करता था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने इसे बदलकर संगीत को एक कौशल और सृजनात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकृत किया है, जो छात्रों को सोचने, समस्या समाधान करने, और स्वयं को व्यक्त करने के लिए एक माध्यम प्रदान करता है। इससे संगीत शिक्षा छात्रों को विचारशीलता और स्वतंत्रता की भावना देने में मदद कर सकती है।

इस शिक्षा में तकनीकी साधनों का सुधार करने का उद्देश्य रखा है, जिससे संगीत शिक्षा को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों में सुझावपूर्ण बनाया जा सके।संगीत शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने राज्यों और स्थानीय संगठनों को भी बढ़ी हुई जिम्मेदारी और स्वायत्तता प्रदान की है, जिससे वे स्वस्थ और अभिवृद्धि को प्राप्त करने के लिए संगीत शिक्षा को स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भ में विकसित कर सकें। इससे संगीत शिक्षा को स्थानीय आदर्शों और अधिक प्रभावी बनाने में मदद मिलेगी।

शिक्षा, ज्ञान एवं विद्या से जुड़ी हुई विधा है, अतः ऐसे ही लोगों को इस क्षेत्र में आना चाहिए जो ज्ञान के प्रति पिपासा रखते हों। मात्र रोजी रोटी के लिए, रोजगार के लिए शिक्षा में आना अधिक मायने नहीं रखता। अपनी क्षमता व रुचि के अनुरूप वे दूसरे पेशे में अपनी सार्थक भूमिक निभा सकते हैं। यदि संगीत शिक्षक में सीखने व सिखाने का भाव नहीं है, तो वह अपनी विधा के साथ न्याय नहीं कर सकेगा। चूँकि युग तकनीकी एवं वैश्विक संचार का है, अतः शिक्षकों को इस भूमिका में स्वयं को तैयार करना होगा। एक संगीत शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को मात्र लेक्चर देना नहीं होना चाहिए, बल्कि ऐसे वातावरण का निर्माण करना होना चाहिए, जहाँ छात्र-छात्राएँ स्वयं अधिक-से-अधिक सीखने के लिए तैयार हो सकें। शिक्षकों को विद्यार्थियों को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करना है, उन्हें जीवनपर्यंत विद्यार्थी बनाना है। यह तभी संभव होगा जब शिक्षक स्वयं विद्यार्थी भाव के साथ अपने विषय में रुचि ले रहे होंगे, विषय की नवीनतम जानकारी के साथ स्वयं को परिचित करा रहे होंगे और स्वयं अध्ययन व स्वाध्याय के लिए नित्यप्रति सचेष्ट हो रहे होंगे। जो शिक्षक ऐसा नहीं कर पाएँगे, वे समय के साथ अप्रासंगिक होते जाएँगे व एक प्रभावी शिक्षक के रूप में अपनी सार्थक भूमिका निभाने में स्वयं के असमर्थ पाएँगे।

आज जब संगीत एक स्वतंत्र विषय के रूप में विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक सिखाया जा रहा है तो यह आवश्यक हो गया है कि हर संगीतार्थी को उसकी रुचि और स्तर को ध्यान में रखकर सिखाया जाए ताकि उनकी सृजनात्मकता विकसित हो सके। संगीत शिक्षक को युग की बदलती परिस्थितियों के साथ कदम-ताल करना होगा। इसके लिए प्रयोगशाला से लेकर क्षेत्र एवं समाज के बीच जाना होगा, जहाँ विषय का प्रायोगिक ज्ञान सिखाया जा सके व इसके माध्यम से जीवन की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार केवल किताबी ज्ञान व कक्षाओं में लेक्चर देने भर से शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता। इसके लिए कक्षा में आपसी चर्चा के साथ-साथ बाहर की गतिविधियों पर आधारित, व्यावहारिक एवं कौशलप्रधान ज्ञान को भी सिखाना होगा। संगीत शिक्षा को जीवन से जोड़ना होगा, इसके विभिन्न पक्षों को समझने व इनसे जुड़ी वर्तमान एवं संभावित समस्याओं के निराकरण की सोच को विकसित करते हुए बेहतर समाज एवं विश्व को बनाने पर विचार करना होगा। हर विद्यार्थी का स्वभाव, रुचि एवं स्तर भिन्न-भिन्न होता है। शिक्षकों को सबकी स्थिति एवं आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा के संप्रेषण की विधा को विकसित करना होगा, जो एक कठिन एवं चुनौतीपूर्ण कार्य है, किंतु अपने पेशे से न्याय के लिए संगीत शिक्षकों को इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करना होगा। खासकर जो विद्यार्थी पिछड़े हुए हैं, उन्हें न्यूनतम स्तर तक लाने के लिए शिक्षक को मशक्कत करनी होगी। विद्यार्थी का उसकी क्षमता, प्रकृति एवं संभावना के अनुरूप श्रेष्ठतम विकास, एक शिक्षक के लिए सबसे बड़े संतोष का विषय हो सकता है।

इस तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय संभावनाओं को लेकर आई है, जिससे राष्ट्रीय पीढ़ी सर्वांगीण विकास के साथ अपने जीवनलक्ष्य को प्राप्त कर सके, समाज-राष्ट्र के निर्माण में सहायक बनते हुए, वैश्विक स्तर पर अपना सार्थक योगदान दे सके।

निष्कर्ष- इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने संगीत शिक्षा को समृद्धिपूर्ण बनाने के लिए कई कदम उठाए हैं और संगीत शिक्षकों को इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर प्रदान किया है। यह शिक्षा को सिर्फ रटने के लिए नहीं, बल्कि समझने, अनुभव करने और अभिव्यक्ति करने के लिए भी एक माध्यम के रूप में देखती है।संगीत शिक्षा को और भी आधुनिक बनाने के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग करने का प्रस्ताव किया है। इससे छात्रों को विभिन्न संगीतीय अनुभवों का सीधा प्रमाण मिलेगा और वे आधुनिक संगीत तकनीकों को सीखने के लिए प्रेरित होंगे । यह समर्थन, प्रशिक्षण, और संगीतीय ज्ञान को बढ़ावा देने का माध्यम है, जो छात्रों को संगीतीय दृष्टिकोण से समृद्धि दिलाने में मदद करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1.पाठक, आर. पी० पाठक,''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ एवं समाधान,''राष्ट्रीय दिल्ली:कनिष्क पब्लिकेशन्स (2010), ।

2. वी. सिंह यादव, "भारतीय शिक्षा का बदलता परिहश्यः चुनौतियां एव समाधान की दिशाएँ,'' राष्ट्रीय दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन्स (२०13) ।

3. प्रो० देवांगन तुलसीराम, ‘’विद्यालयीन संगीत शिक्षा का प्रारम्भ, विकास एवं वर्तमान शास्त्रीय संगीत शिक्षा ;समस्याए एवं समाधान आदित्य पब्लिकेशन्स 2008

4. प्रियदर्शी, रूपक, "संगीत-शिक्षण के मौजूदा विकल्प कितने प्रासांगिक’’ संगीत, वर्ष 62/अंक 10, अक्टूबर 1996.

5. डॉ चौहान राजेश,लेख, संगीत के बिना राष्ट्रीय शिक्षा नीति सफल नही होगी,शिमला